आगराः इतिहास के पन्नों में

आगरा अपना गौरवशाली इतिहास समेटे वह शहर है, जो आज भी विश्व के मानचित्र पर अपना अधिकार पूर्वक स्थान रखता है। आगरा केवल इसलिये महत्वपूर्ण नही कि वह समयावधि तक मुगन साम्राज्य की राजधानी रहा, बल्कि इसका अपना प्राचीन इतिहास है जो सभी आयामो से इसे यह स्मरण कराता है कि यह गौरवशाली धरोहर एवं यशोमंडित समाजिक, राजनीतिक एवं सांसकृतिक विरासत का स्वामी है। अतीत में महाभारत से जुड़े आगरा नगर को जनश्रुतियों के अनुसार महाराजा अग्रसेन द्वारा इस नगर की स्थापना किये जाने तथा इसे राजधानी बनाये जाने के कारण इसका का नाम आगरा पड़ा। इसके अतिरिक्त आगरा ब्रज मण्डल के उन बारह वनों में से एक था जहाॅं बाल्यावस्था में भगवान कृष्ण गायों को चराया करते थे और गोपी-गोपिकाओं के साथ लीला किया करते थे। पुराणों में आगरा की प्राचीनता, घने वनों से आच्छादित एवं सरिता तट पर प्राकृतिक सुषमा में मण्डित मनहर प्रदेश के रूप में वर्णित है, जहाॅं ऋषियों एवं साधकों ने तपस्या एवं साधना की। आगरा के संबंध में प्रथम प्रमाणित जानकारी 1080 ई. से मिलती है, जब महमूद गजनवी ने इस पर आक्रमण किया। उस आक्रमण और युद्व का वर्णन ख्वाजा मसूद बिन सुलमान ने किया है। तदनुसार आगरा का दुर्ग पहाड़ी की रेत पर बना हुआ था और दीवारें पहाड़ियाॅं जैसी थी। बाद में बादलगढ़ का किला इसी पुराने किले में परिवर्तित किया गया होगा तथा अकबर द्वारा लाल पत्थरों से पुर्ननिर्माण कर इसे वर्तमान जैसा मजबूत और सुन्दर स्वरूप प्रदा किया गया। 16वीं सदी के प्रारम्भ में सिकन्दर लोदी ने सन् 1504 में आगरा को अपनी राजधानी बनाया। लोदी वंश के पतन के बाद भी आगरा उत्तरी भारत की राजधानी बना रहा और मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ इसका महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। अकबर तथा उसके निकटतम उत्तराधिकारियों के शासन काल में आगरा भारत का प्रथम नगर बन गया।

बाबर में पानीपत के युद्ध (1526 ई0) मंे अंतिम लोदी सुल्तान इब्राहीम लोदी को परास्त कर आगरा को अपना निवास बनाया तथा भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखने वाले इस शासक ने हश्त बिहिश्त अथवा नूरी अफगान बाग नाम से एक सुन्दर बगीचा लगवाया, जो आज कल रामबाग नाम से जाना जाता है। बाबर के बाद 1530 ई0 मंे हुमांयूं आगरा की गद्दी पर बैठा उसके शासन काल का निर्मित एक मात्र भवन कछपुरा गांव में यमुना तट पर स्थित एक मस्जिद है, जिस पर उसका आलेख अंकित है। शेरशांह ने भी आगरा को अपनी राजधानी बनाये रखा था।

महान सम्राट अकबर के शासनकाल (1556-1605) मंे आगरा विश्व भर में विख्यात हुआ और मध्यकालीन विश्व के महान तथा भव्य नगरों में गिना जाने लगा। अकबर ने आगरा में अनेकों इमारतों का निर्माण कराया। प्रसिद्ध लाल किला परिसर में अनाये गये इन भवनों में जहांगिरी महल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, मच्छी भवन, जोधाबाई का महल तथा प्रशासकीय भवनों का निर्माण आदि सम्मिलित है। अकबर ने 1556 ई0 में फतेहपुर सीकरी नगर को वसाया था। आगरा मं ईसाई मत के पहले चर्च का निर्माण भी अकबर काल में हुआ था। इस काल में सभी जाति एवं धर्म के लोग मिलजुल कर रहते थे, जिसकी पृष्ठ भूमि में ही अकबर ने सुलहकुल सिद्धान्त की घोषणा की। अकबर के व्यक्तित्व एवं समाज को महान बनाने में उनके नवरत्नों राजा

मान सिंह, राजा टोडरमल, हकीम लुकमान, राजा बीरबल, मुल्ला दो प्याजा, अबुल फजल, फैजी, अब्दुल रहीम खानखाना तथा तानसेन की भूमिका में कम नही थी। अकबर ने हर सम्प्रदाय के लोगों मंे आपसी मेल मिलाप तथा भाई-चारा भी भावना उत्पन्न करने के लिये अलग से एक धर्म की स्थापना की थी, जिसका नाम दीने इलाही था। जहांगीर के काल की इमारतों में सिकन्दरा एवं एत्माद्दौला प्रसिद्ध है। शाहजहां ने अपनी बेगल मुमताज महल की याद में विश्व प्रसिद्ध ताजमहल बनावाकर आगरा को अमर कीर्ति दिलाई। शाहजहां का शासनकाल इमारतों के निर्माण एवं उनके सौन्दर्यीकरण के कारण ही स्वर्णयुग कहलाया।

ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान 1805 ई0 में आगरा में एक कलेक्टर नियुक्ति कर इसे अंग्रेजी साम्राज्य का जिला बना दिया गया। सन् 1833 ई0 मंे आगरा प्रेसीडेंसी की नीव पड़ी। आगरा प्रेसीडेंसी में गवर्नर की नियुक्ति की गई जिसकी राजधानी आगरा थी। सन् 1835 ई0 में प्रेसीडेंसी के स्थान पर पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत (जिसे सयुक्त प्रान्त के रूप में जाना जाता है बनाया गया, जिसकी राजधानी होने की प्रतिष्ठा आगरा को 1857 ई0 तक ही मिली। सन् 1857 ई0 की क्रांति के तत्काल बाद संयुक्त प्रान्त की राजधानी आगरा से हटाकर इलाहाबाद स्थानान्तरित कर दी गई। इसके पश्चात् आगरा केवल कमिश्नरी का रूप बनकर रह गया जो आज तक है।

आगरा नगर का ऐहिहासिक दृष्टि से ही नही, वरन सांस्कृतिक दृष्टि से भी अधिक महत्व है। यमुना नदी के किनारे बसे होने के कारण भारत के हदय का संबंध बंगाल के हरे-भरे मैदानों से यह नदी जोड़ती है। तब आगरा आज से अधिक व्यापारिक मण्डी था और नावों द्वारा यहां व्यापार होता था। प्रागौतिहासिक काल में आर्यो का निवास स्थल (आर्य गृह) होने के कारण यह अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसके उत्तर पश्चिम कोने पर कैलाश, पश्चिम-दक्षिण कोने पर पृथ्वीनाथ, दक्षिण-पूर्व कोने पर राजेश्वर तथा उत्तरी पूर्वी सीमा पर बल्केश्वर तथा मध्य मनकामेश्वर मंदिर इसकी प्राचीन संस्कृति के प्रतीक है। यहां से दस किलोमीटर दूर रेणुका (रूनकात) क्षेत्र भी इसके सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक है। यहां से दस किलोमीटर दूर रेणुका (रूनकता) क्षेत्र भी इसके सांस्कृतिक गौरव का परचम फहराये है। यहां यमुना पश्चिम को बहती है। यह त्रटषि जमदग्नि की तपोभूमि है एवं परशुराम की माता रेणुका का मंदिर यही है। गउघाट पर भक्त सूरदास की कुटी बनी है। आगरा का बटेश्वर क्षेत्र द्वापर और कलियुग की सांस्कृतिक एवं समाजिक व्यवस्था का केन्द्र रहा है तथा एत्मादपुर के पास रेह गांव से गुर्जर प्रतिहार काल की प्राप्त मूर्तियाॅं और शौरीपुर से उपलब्ध गुप्तकालीन, बौद्धकालीन सिक्के तथा मूर्तियों इसे संास्कृतिक अभिमान प्रदान करती है। अनुसुईया और शबरी की तपोभूमि भगवान परशुराम और जौनाचार्य नेमिनाथ 12 वें तीर्थकर का जन्म स्थान, श्री कृष्ण का क्रीड स्थल, सूरदास की जन्मभूमि यहां की पावन माटी मंे अव्यवस्थित है। भारतीय संगीत कला में भी आगरा का महत्वपूर्ण स्थान है। आगरा घराने की गायकी, शास्त्रीय संगती, उच्चस्तरीय कलात्मक राग एवं रागनियों के लिये प्रसिद्ध है। इस गायकी के प्रंतिपादक तानसेन के संबंधी थे। यह लोककला क्षेत्र मंे भी अग्रणी है। फुलट्टी बाजार, नमक की मंडी, नूरी दरवाजा, बेलनगंज आदि ये केद्र है, जहां आज भी ख्याल, लावनी, चोबोला तथा रसियों का अनवरत प्रदर्शन वार्षिक रूप से होता है। भगत शैली यहां की प्राचीन शैली है। रसियों की मथुरता, लांगुरिया का भक्ति भाव व रसधारा, नौटंकी के तेवर तथा जिकड़ी भजन यहां के लोकजीवन की सशक्त प्रस्तुति करते है।

साहित्य के क्षेत्र में भी आगरा विश्व का वह शहर है जो अपनी साहित्यिक परम्परा पर सहज ही गर्व कर सकता है। उर्दू साहित्य में गजल की परंपरा की शुरूआत यही से हुई। गजल के जन्मदाता मीर तकी मीर और आरजू यहाॅं जन्मे थे। विश्व विख्यात शायर गालिब का जन्म स्थानीय कालामहल मौहल्ले में हुआ था। उर्दू साहित्य के सृजन में अकबर के नवरत्न फौजी का शानदार योगदान रहा। जन कवि नजीर अकबराबादी पर इसे गर्व है। कौमी एकता के इस शायर ने आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व जनवादी काव्य की रचना की। स्थानीय नूरी दरवाजा मौहल्ले में जन्म नजीर कालान्तर में अपनी ससुराल मलका गली ताजगंज में रहने लगे। आगरा से बेहद मौहब्बत के कारण आपने राजाओं, नबावों के निमंत्रण ठुकरा दिये। बंजरानामा, मुफ्लिसी, रोटियां, कन्हैया का बालपन आपकी लोकप्रिय रचनायें है। आज भी प्रतिवर्ष बंसत पंचमी के दिन नजीर अकबराबादी की जयंती मनाई जाती है, जिसमंे सर्वधर्म सभा एवं उनके कलामों का पाठ किया जाता है। विख्यात रंगकर्मी हबीब तनवीर ने नजीर ही की रचनाओं पर आगरा बाजार नाटक का समूचे देश में सफलता से मंचन किया। जनाब मैकश अकबराबादी आलम फतेहपुरी गौहर अकबराबादी तथा असरार अकबराबादी आदि उर्दू शायरी के श्रेष्ठ शायर है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में आगरा का अप्रतिम योगदान रहा है लल्लूलाल जी ने आगरा में जन्म लेकर फोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता से हिन्दी के पहले खड़ी बोली के गं्रथ प्रेमसागर की रचना की। शुद्ध हिन्दी के पक्षधर राजा लक्ष्मण सिंह ने आदि कवि कालीदास के अभिज्ञान शकुन्तल, रघुवंश, मेघदूत का हिन्दी में अनुवाद किया। महाकवि सूर ब्रज कोकिल सत्यनारायण कवि रत्न, पत्रकार कृष्ण दत्त पालीवाल, पत्रकार गणपति चंद जी केला, संपादकार्चा पं. रूद्रदत्त शर्मा, डाॅ0 पदम सिंह कमलेश, फूल चंद जैन सारंग, सोम ठाकुर डाॅ0 शशि साहित्यकारों के अतिरिक्त अमृत लाल नागर, डाॅ0 राम विलास शर्मा, डाॅ0 राजेन्द्र यादव, उदयनशर्मा तथा विमांशु दिव्याल जैसे सुपरिचित रचनाकारों पर आगरा अपने को सौभाग्यशाली मानता है। बच्चों के गांधी नाम से सुविख्यात साहित्यकार स्व0 श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की जन्म स्थली भी आगरा है। इनकी कवितायें कश्मीर से कन्याकुमारी व पश्चिम बंगाल से गुजरात तक पढ़ी-पढ़ाई जाती है। चिकित्सा में सरोजिनी नायडू चिकित्सालय का गौरवशाली इतिहास रहा है यहाॅं के चिकित्सक विश्वस्तर की ख्याति अर्जित कर चुके है। मानसिक आरोग्यशाला, जालमा कुष्ठ चिकित्सालय आदि ख्याति प्राप्त संस्थान इसकी यशकीर्ति को चतुर्दिक बिखेरते है। यहां का आगरा विश्वविद्यालय, (वर्तमान में डाॅ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय) केन्द्रीय संस्थान, दयालबाग डीम्ड विश्वविद्यालय, आगरा काॅलेज, आर.बी.एस. काॅलेज, सेन्ट जोंस काॅलेज, परास्नातक व शोध संस्थान के. एम. मुंशी हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विद्यापीठ, समाज विज्ञान संस्थान, गृह विज्ञान संस्थान आदि उच्च शिक्षा के अनेक केन्द्र इसकी गौरव गाथा के जीवंत उदहारण है। राधास्वामी मत की जन्मस्थली यह शहर सिखों के गुरूओं की बलिदानी स्थली भी रहा है।